

सारांश

अहिंसक समाज के सन्दर्भ में गाँधी जी का मानना था कि सत्य से अलग कोई भगवान नहीं है सत्य की शिक्षा का एक मात्र उपाय अहिंसा है |अहिंसा की अखंड साधना से ही सत्य का पूर्ण साक्षात्कार प्राप्त किया जा सकता है | वस्तुतः ईश्वर की तरह सत्य का साक्षात्कार भी बहुत कठिन है क्योंकि वह अत्यंत रहस्यमय है | बड़े-बड़े ऋषि-मुनी ज्ञानी और महर्षि उनके भेद को नहीं जान सके | तो साधारण मनुष्य उसे क्या पहचान पायेगा |

अहिंसा वह सिद्धांत या निति है जिनमे अपने विरोधी को प्रेम से जीता जाता है, घृणा या लड़ाई से नहीं | अहिंसा की दृष्टि में कोई भी घृणा का पात्र नहीं हो सकता पापी भी नहीं | गाँधी जी बाइबल के इस वाक्य के अनुयाई है पाप से घृणा करो पापी से नहीं | गाँधी जी की दृष्टि में किसी को कष्ट पहुंचाने का विचार या किसी को किसी को बुरा चाहना भी हिंसा है | किसी के प्रति घृणा या द्वेष की भावना रखना हिंसा है नागरिकता के सारे आदर्श और सदाचार के सारे नियम अहिंसा के विचार के क्षेत्र में आ जाते है| अहिंसा निर्बल व्यक्ति का आश्रय नहीं बल्कि शक्तिशाली का अस्त्र है | यह भौतिक शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति के आगे झुकाने की कला है | मनुष्य के लिए अहिंसा आत्मशुद्धि का शाधन है |

अपनी आत्मकथा तथा अन्य अनेक स्थलों पर गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उनकी दृष्टि में सत्य सरोच्य तत्व है तथा उनके दर्शन के अन्य महत्वपूर्ण तत्व यथा अहिंसा,अस्तेय,अपग्रह, तथा ब्रम्हचर्य आदि सत्य के अंतर्गत समाविष्ट है | गाँधी के विचार अहिंसा की स्थापना सर्वोच्य धर्म या सदगुण के रूप में की गई है |

इस शोध कार्य में प्रथम अध्याय में सभी शोध प्राविधि का उपयोग किया गया है| जो कि इस शोध कार्य में केस स्टडी किया गया है | और द्वितीय अध्याय में अहिंसा के बारे में पूर्ण रूप से बताया गया है कि गाँधी जी का अहिंसा के प्रति क्या योगदान रहा है | तृतीय अध्याय में गाँधी जी के अहिंसा दर्शन को बताया गया है | और चतुर्थ अध्याय में गाँधी जी की दृष्टि में अहिंसक समाज की कैसे रचना होती

है | और अंत में इस शोध कार्य में इस विषय पर निष्कर्ष निकाला गया है, की गाँधी जी समाज में किस प्रकार से धर्म के प्रति क्या उनकी धारणा है |

यह शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण अवधारणायें हैं |

Summary

in the context of Gandhi's nonviolent- believed that truth is not truth no God apart from a single measure of proofed of nonviolence. From the silence of non-monolithic full interview of truth can be achieved. In fact God is also very tough truths like the interview because he's extremely mysterious. Large Sage-priest knowledgeable and can not distinguish them Maharishi life | So what will recognize ordinary man | Nonviolence is the principle or policy that is your anti-war won by love, hate or fight | Nobody in sight of nonviolence can be sinful not byword none | Gandhi-ji Bile is anuyai this sentence do not hate sinners from sin | Gandhi-ji of sight in the idea of a higher plateau suffer or anybody want to even worse violence. Keep a sense of malice or hatred towards violence all citizenship model and the idea of nonviolence all ethics rules come in. Nonviolence does not shelter individuals rather than powerful weapons of slack. This physical power adhyaktmik power forward jhukane art |

His autobiography and numerous sites at Gandhi-ji has said that his sight as spast truth in sarochya elements and other important elements of his philosophy as nonviolence, asta, apagrah, and is included under true bramhacharya etc | Gandhi's idea of nonviolence as the highest setting is sadgun dharman or | The first chapter in this research work in all research pravidhi was used. The research work has been done in the case study | And chapter II of nonviolence in the Gandhi contributed towards nonviolence of-ji | Chapter III described the philosophy of nonviolence Gandhi-ji | And IV Chapter Gandhi-ji of sight how

nonviolent society composition. And finally the research work on this subject has concluded, Gandhi-ji in society of how what is their perception of dharman | This research work are important for avdharnayen |